निसिदिन बरसत नैन हमारे

भजन-परिचय : विजु कुलकर्णी

'मधुर सरप्राइज़' २०२० के दौरान, श्रीगुरुमाई ने बताया कि भारत के सन्तों ने किस प्रकार अपने अनुभवों की व्याख्या करते हुए और शास्त्रों के ज्ञान का सत्त्व प्रदान करते हुए भगवान व श्रीगुरु के बारे में लिखा है व उसे गाया है। इनमें से एक सन्त थे, सन्त सूरदास। सूरदास जी जन्म से ही दृष्टिहीन थे, फिर भी वे अपने अन्तर-चक्षुओं से भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन किया करते थे जिनमें भगवान श्रीकृष्ण के बाल्यकाल और वृन्दावन के गाँव में गोपाल [गायों के संरक्षक] रूप के दृष्टान्त सम्मिलित हैं।

अपने कई भजनों में, सूरदास जी ने भगवान के साथ एकरूप होने की अपनी उत्कट लालसा को वृन्दावन की गोपियों के मुख से निकली वाणी के रूप में व्यक्त किया है। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति गोपियों की भक्ति का गुणगान सम्पूर्ण इतिहास में किया गया है। सूरदास जी, अत्यन्त मर्मस्पर्शी रूप से गोपियों के अपने प्रियतम के विरह से उत्पन्न पीड़ा को अश्रुओं की अविरल धारा कहकर अभिव्यक्त करते हैं।

मैंने पचास वर्षों से भी अधिक समय से सिद्धयोग संगीत के गायन की अनुपम सेवा अर्पित की है और मुझे इसका हरेक क्षण अत्यन्त प्रिय रहा है और आगे भी रहेगा। जब गुरुमाई जी ने कहा कि मैं सूरदास जी द्वारा रचित यह भजन गाऊँ जिससे ऑस्ट्रेलिया में रहने वाले सभी को जो पीड़ा व हानि हुई है वह कम हो सके और स्थिति के पूरी तरह सामान्य होने तक उनकी इस लम्बी व कठिन यात्रा में उन्हें सम्बल मिल सके, तो मुझे लगा *हाँ, मैं यह कर सकती हूँ; मैं इसे अवश्य करना चाहूँगी।*

मैंने गुरुदेव सिद्धपीठ में इस भजन को रिकॉर्ड किया, चूँकि मैं वर्तमान में यहीं सेवा अर्पित कर रही हूँ। इसकी संगीत-रचना कर्णप्रिय राग 'मेघ मल्हार' में है। राग मेघ मल्हार के गुणों में से एक है महान प्रसन्नता — वह प्रसन्नता जिसके साथ लोग व प्रकृति चिलचिलाती गर्मी के बाद वर्षा के आगमन का स्वागत करते हैं।

मैं यह कामना करती हूँ कि इस भजन को सुनकर और सूरदास जी के शब्दों के भावार्थ को पढ़कर आपको राहत मिलेगी — इस कठिन समय में आपको आराम व सान्तवना मिलेगी।

निसिदिन बरसत नैन हमारे

ध्रुवपद :

रात-दिन हमारे नैनों से अश्रुओं की वर्षा होती रहती है।
जब से भगवान कृष्ण गए हैं, तब से हमारे लिए वर्षा ऋतु सदैव बनी ही रहती है।

पद १ :

हमारी आँखों में लगा काजल हमारे आँसुओं के साथ मिल गया है जिससे हमारे गाल
काले हो गए हैं।
हमारी चोली कभी सूखती ही नहीं
क्योंकि अश्रुधाराएँ उस पर अविरल बहती ही रहती हैं।

पद २ :

पावस ऋतु की वर्षा की तरह लगातार बहते हमारे आँसू,
झिलमिलाते तारों की तरह जगमगाते हैं।
अपने प्रियतम को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते
हमारे पाँव थक गए हैं।
सूरदास जी भगवान कृष्ण को पुकारती गोपियों के स्वर को सुन रहे हैं :
“हे कान्हा, हमारे आँसुओं में पूरा ब्रज डूबता हुआ-सा दिखाई दे रहा है,
तुम आकर हमें उबार क्यों नहीं लेते?”

भाषान्तर © २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।